पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 01.11.2024 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली–110007, आई. एफ. एस.कोड - SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9810117464 पर एस.एम.एस कर दें या 9868051444 पर googlepay कर दें। –अनिल आर्य

वर्ष-41 अंक-11 कार्तिक-2081 दयानन्दाब्द 201 01 नवम्बर से 15 नवम्बर 2024 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 01.11.2024, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

हंसराज कॉलेज में काव्य गोष्ठी सम्पन्न

कविता अभिव्यक्ति का माध्यम है –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

शुक्रवार 18 अक्टूबर 2024, हंसराज कॉलेज व कला मनस्वी मंच के तत्वावधान में दिल्ली विश्वविद्यालय के हंसराज कॉलेज के सभागार में प्राचार्य डॉ. रमा के सानिध्य में 'रसाल' काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रेम रस,व्यंग,हास्य व देश भक्ति पूर्ण गीतों से कार्यक्रम सराबोर हो गया। समारोह के मुख्य अतिथि केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि कविता अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। कवि अपने अपने खट्टे मीठे अनुभव के आधार पर उसी रस में अपनी बात को कहता वहीं कोई कवि,शायर बन जाता है।उन्होंने अपनी स्मृति याद करते हुए कहा कि वह 1977 से कॉलेज से जुड़े हैं। यह महर्षि दयानन्द व महात्मा हंसराज का स्मारक है। राष्ट्रवाद की चर्चा करते हुए कहा कि राष्ट्र सर्वोपरि है राष्ट्र रहेगा तो हम सब सुरक्षित रहेंगे। कार्यक्रम की सूत्रधार राजरानी भल्ला एडवोकेट ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिये ऐसे आयोजन करते रहेंगे। कार्यक्रम का संचालन युवा कवि धर्मवीर धर्म ने किया। प्रमुख कवियों में डॉ. संजय जैन, सरला मिश्रा, संदीप शजर, विनीत पाण्डेय, अनुराधा पाण्डेय, पिंकी आर्या, विक्रांत, डॉ. रवि प्रकाश गौड़ ने काव्य पाठ किया। पूर्व मेट्रो पोलेटिन मैजिस्ट्रेट ओम सपरा ने अपनी शुभकामनायें प्रदान की। आयोजकों में मधु अरोड़ा, शिखा अरोड़ा, एकता सिंह, सीमा शर्मा, डॉ. नीतू शर्मा, डॉ. राजवीर मीना, डॉ. मनीष ओझा आदि उपस्थित थे।

सादर निमंत्रण

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष

सादर निमंत्रण

अनिल आर्य के जन्मोत्सव पर

यज्ञ व गीत संगीत

ब्रह्मा: आचार्य महेन्द्र भाई जी

मुख्य अतिथि: आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी (अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य पुरोहित सभा)

विशिष्ट अतिथि: श्री जितेन कोही जी (हास्य योग गुरू)

अध्यक्ष: श्री ओम सपरा (प्रधान उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मंडल)

वीरवार 14 नवम्बर 2024, शाम 5.00 से 7.00 बजे तक

स्थान: आर्य समाज कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली

प्रीति भोज– रात्री 7.00 बजे

आप सादर आमंत्रित हैं

निवेदक:– देवेन्द्र भगत मंत्री समाज दुर्गेश आर्य– संयोजक धर्मपाल आर्य –कोषाध्यक्ष अरुण आर्य– सह संयोजक

जहां नहीं होता कभी विश्राम ओ३म् आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली

141वें महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बलिदान दिवस पर

एक शाम ऋषि दयानन्द के नाम

रविवार, 10 नवम्बर 2024, शाम 4.00 से 8 बजे तक

स्थानः आर्य समाज पंजाबी बाग विस्तार (क्लब रोड), दिल्ली-110026

यज्ञः सायं 4 से 5 बजे तक, ब्रह्माः आ. जसवन्त शास्त्री, प्रवचनः आ. गवेन्द्र शास्त्री

मुख्य यजमानः सर्व श्री डॉ. (कर्नल) विपिन खेड़ा, वीरेश बुग्गा, सुरेश आर्य, प्रेम प्रकाश, डॉ. राजीव चावला

गायक कलाकार

नरेन्द्र आर्य सुमन - सुदेश आर्या - पिंकी आर्या - किरण सहगल - मधु खेड़ा

मुख्य अतिथि : श्रीमती कमलजीत सहरावत (सांसद), प्रो. जगदीश मुखी (पूर्व राज्यपाल)

अध्यक्षताः श्री सत्यानंद आर्य (संरक्षक, आर्य समाज पश्चिमी पंजाबी बाग)

विशिष्ट अतिथि : श्री आनन्द चौहान, श्री सुभाष आर्य (पूर्व महापौर), श्रीमती सुमन त्यागी (पार्षद)

गरिमामय उपस्थितिः सर्वश्री यशपाल आर्य (पूर्व पार्षद), ठाकुर विक्रम सिंह, ए.के धवन, ओम सपरा, लायन प्रमोद सपरा, रवि चड्डा, जितेन्द्र खरबंदा, सुरेन्द्र मानकटाला, के.एल. राणा, कस्तूरीलाल मक्कड़, राजेन्द्र लाम्बा, नरेश गुलाटी, प्रेम छाबड़ा, शशि तुली, अमरनाथ बत्रा, राजकुमार अग्रवाल, ओमवीर सिंह, भोपालसिंह आर्य, अमरसिंह आर्य, संजय सपरा, ओमप्रकाश अरोड़ा, सुरेन्द्र गुप्ता, धर्मपाल परमार, अंजू जावा, नरेन्द्र अरोड़ा, राजेन्द्र दुर्गा, सोहनलाल आर्य, अरूण आर्य, संजीव महाजन, कृष्णा पाहुजा, डॉ. धर्मवीर आर्य, विनोद कालरा, सुदेश डोगरा, आस्था आर्या, सुनील गुप्ता, ओमप्रकाश नांगिया, प्रेम सचदेवा, जीवन लाल आर्य, वीरेश आर्य, सुशील बाली, आदर्श आहुजा, गायत्री मीना, उर्मिला-महेन्द्र मनचंदा, अनिता ग्रोवर, राजेश मेहन्दीरत्ता, कुसुम भंडारी, सुनीता बुग्गा, सोनिया संजू, राधा भारद्वाज, वेद खट्टर, ओमप्रकाश गुप्ता, सुशील सलवान, करूणा-तिलक चांदना, रजनी गर्ग, अविनाश बंसल (अभिनन्दन वाटिका), डिम्पल-नीरज भंडारी, सीमा-रोहित ढींगरा, कृष्ण बवेजा, प्रवीण तायल (ब्रिज एवं कम्पनी), सोनल सहगल, संतोष वधवा, कृष्णा गांधी, सुरेन्द्र बुद्धिराजा, चन्द्रमोहन कपूर, चन्द्रमोहन खन्ना, नेत्रपाल खन्ना, राकेश मल्होत्रा, इंद्रा शर्मा, संगीता चौधारी, राकेश आर्य, सुरेश टण्डन, ज्योति ओबराय, अजय तनेजा, विजय कपूर, सुरेन्द्र वर्मा, विक्रांत चौधरी।

आर्य महिला रत्न अवार्ड से सम्मानित होगें

श्रीमती डॉ. उषा मित्तल	श्रीमती शशि जयसवाल	श्रीमती वीना कोछड़
श्रीमती आशा गेंद	श्रीमती संतोष भारद्वाज	श्रीमती आदर्श आर्य
श्रीमती अंजना गुप्ता	श्रीमती प्रभा सरदाना	श्रीमती मधु चुघ
श्रीमती गीता शर्मा	श्रीमती कमलेश आर्य	श्रीमती डॉ. वीना गौतम
श्रीमती किरण चोपड़ा	श्रीमती महेश्वरी	श्रीमती ऋतु तनेजा

आमंत्रित आर्य नेताः सर्व श्री आर.पी. सूरी, अशोक सूरी, अशोक कथूरिया, डालेश त्यागी, अशोक गुप्ता, पुष्पलता वर्मा, माता कृष्णा सपरा, मैथिली शर्मा, आनन्द प्रकाश गुप्ता, निर्मल जावा, प्रि. अंजू महरोत्रा, प्रोमिला गुप्ता, आशा भटनागर, नम्रता रहेजा, संजीव सेठी, सोहनलाल मुखी, प्रकाशचंद आर्य, सुरेन्द्र शास्त्री, माता शीला ग्रोवर, डॉ. दीपक सचदेवा, अनीता कुमार, अशोक आर्य, नरेश विज, डॉ. विशाल आर्य, कृष्णकुमार यादव, सुरेश आर्य, गोपाल आर्य, सुदेश भगत, वीरेन्द्र आहूजा, गजेन्द्र आर्य, स्वर्णा सेतिया, यज्ञवीर चौहान, दष्ठारथ भारद्वाज, प्रहलाद सिंह, अजय चौधरी,

विमोचनः डॉ. विवेक आर्य की पुस्तक 'स्वामी दयानंद को जाने' का विमोचन

ऋषि लंगर रात्रिः 8 बजे, आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

-:निवेदकः-

अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष	महेन्द्र भाई राष्ट्रीय महामंत्री	धार्मपाल कुकरेजा प्रधान	एस.के. छतवाल कार्यकारी प्रधान	एस.एस. राणा मंत्री	पी.एस. दहिया कोषाध्यक्ष
रामकुमार सिंह राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	देवेन्द्र भगत राष्ट्रीय मंत्री	प्रवीण आर्य राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	संतोष शास्त्री, हर्षदेव शर्मा राष्ट्रीय मन्त्री	अनिल कपूर, सुनील सहगल प्रबन्धक	
दुर्गेश आर्य राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	धर्मपाल आर्य राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	वेदप्रकाश आर्य राष्ट्रीय मन्त्री	सौरभ गुप्ता, अरूण आर्य, रोहित कुमार, वरूण, गौरव झा प्रबंधक गण		

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007, मो. 9810117464, 9013137070, 9958889970
E-mail: aryayouthn@gmail.com Website: www.aryayuvakparishad.com
Group: aryayouthgroup@yahoogroups.com join-http://www.facebook.com/group/aryayouth

मृतक श्राद्ध का विचार वैदिक सिद्धान्त पुनर्जन्म के विरुद्ध है

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

महाभारत युद्ध के बाद वेदों का अध्ययन–अध्यापन अवरुद्ध होने के कारण देश में अनेकानेक अन्धविश्वास एवं कुरीतियां उत्पन्न हुईं। सृष्टि के आरम्भ में सर्वव्यापक एवं सर्वातिसूक्ष्म व सर्वज्ञ ईश्वर से प्राप्त वैदिक सत्य सिद्धान्तों को विस्मृत कर दिया गया तथा अज्ञानतापूर्ण नई–नई परम्पराओं का आरम्भ हुआ। ऐसी ही एक परम्परा मृतक श्राद्ध की है। मृतक श्राद्ध में यह कल्पना की गई है कि हमारे मृतक पूर्वज व पितरों को वर्ष में एक बार आश्विन महीने के कृष्ण पक्ष में आवाहन कर भोजन एवं उनकी प्रिय वस्तुओं के दान से उन्हें सन्तुष्ट करना चाहिये। यह उच्च मानवीय भावना तो है परन्तु यह सत्य पर आधारित न होने से एक आधारहीन व अनावश्यक परम्परा व कार्य है। इससे मनुष्य जाति की उन्नति न होकर अवनति होती है। इसे व्यवहारिक रूप दिया ही नहीं जाता अर्थात् मृतक पितरों को भोजन कराया ही नहीं जा सकता। यह एक ऐसा अन्धविश्वास है जिसे हम अपनी आंखें मूंद कर करते है। मृतक श्राद्ध करने पर कोई मृतक पितर व पूर्वज सशरीर भोजन करने श्राद्ध स्थान पर उपस्थित नहीं होता। उनके नाम पर जन्मना ब्राह्मण कहे जाने वाले लोगों को पकवान व भोजन परोसे जाते हैं, दान दक्षिणा दी जाती है और यह मान लिया जाता है कि हमारे मृतक पितर व पूर्वज हमारे कराये भोजन से सन्तुष्ट हो गये हैं। यह एक ऐसी परम्परा व धारणा है जिसे हम ज्ञान व विज्ञान के आधार पर प्रस्तुत नहीं कर सकते। वेदों में इसका कहीं विधान नहीं है।

वेद व वैदिक परम्परा में हम परिवार के जीवित माता, पिता, पितामह, पितामही, प्रपितामह तथा प्रपितामही की ही श्रद्धापूर्वक सेवा करने तथा उन्हें अपने आचरण एवं व्यवहार से सन्तुष्ट रखने का विधान है। मध्यकाल के जिन दिनों में इस परम्परा को आरम्भ किया गया, उस अवसर पर इस बात को विस्मृत कर दिया गया कि घर के जीवित पितरों माता, पिता से प्रपितामह व प्रपितामही तक का श्राद्ध अर्थात् श्रद्धापूर्वक–सुश्रुषा सेवा प्रतिदिन करने का विधान है परन्तु मृतक पितरों पर यह लागू ही नहीं होता। मृतक परिजनों के मरने के बाद कुछ ही दिनों व महीनों में ईश्वर की व्यवस्था से वह अपने जीवन के शुभ व अशुभ अथवा पुण्य व पाप कर्मों का फल भोगने के लिये कर्मानुसार नये जीवन व जन्म को प्राप्त हो जाते हैं। वहां उनकी व्यवस्था सर्वव्यापक, सबके आधार तथा सबके धारणकर्ता परमात्मा की कृपा से वह पुनर्जन्म को प्राप्त जीवात्मायें स्वयं व उन जीवात्माओं के नये जीवन के परिवारजन करते हैं। हमारे भोजन कराने से हमारे मृतक किसी पितर को भोजन पहुंचना सर्वथा असम्भव है। अतः वेदों के शीर्ष वेदाचार्य ऋषि दयानन्द ने इस वेदविरुद्ध प्रथा को अस्वीकार कर पंचमहायज्ञों के अन्तर्गत पितृ–यज्ञ करते हुए अपने घर के सभी जीवित पितरों व वृद्धों की आदर व सम्मान से सेवा करने व उन्हें भोजन, वस्त्र एवं ओषधि आदि से सन्तुष्ट रखने के विधान को जारी रखा है और जीवित पितरों की सेवा व उनको सन्तुष्ट रखने को ही वैदिक सत्य परम्परा व पितरों का ''श्राद्ध'' कर्म माना है।

मनुष्य व सभी प्राणी एक सत्य व चेतनता के गुण से युक्त एकदेशी, ससीम, अनादि, नित्य, अल्पज्ञ, कर्म–फल के भोक्ता, मनुष्य योनि में कर्म करने में स्वतन्त्र तथा कर्मों के फल भोगने में परतन्त्र जीवात्मा होते हैं। कर्म ही जन्म का परिणाम होते हैं। हमारा वर्तमान जन्म भी हमारे पूर्वजन्म के पाप–पुण्य कर्मों का फल भोगने के लिये हुआ है और हमारी मृत्यु हमारे शरीर की जन्म, वृद्धि व नाश के सिद्धान्त के आधार पर वार्धक्य में रोग आदि कारणों से होती है। 'जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु ध्रुवं जन्म मृतस्य च' सिद्धान्त के अनुसार जिस जीवात्मा का जन्म हुआ है उसकी मृत्यु और जिसकी मृत्यु होती है उसका जन्म होना निश्चित व ध्रुव सत्य है। इस सिद्धान्त के अनुसार मृत्यु के बाद जीवात्मा का नया जन्म हो जाता है। नये जन्म में सभी जीवात्माओं को माता, पिता, भाई, बन्धु व परिजन सब प्राप्त होते हैं और वह स्वयं व परिवार के सहयेाग से भोजन सहित अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। उसे अपने पुराने जन्मस्थान के सम्बन्धियों से भोजन प्राप्त करने की किंचित भी आवश्यकता नहीं है। मृतक श्राद्ध विषयक विचार व मान्यतायें काल्पनिक हैं। वेदों व ऋषियों के ग्रन्थों में इस मान्यता का कहीं आधार नहीं है। अतः इस वेद–विरुद्ध कार्य को हमें करना नहीं चाहिये। यह अविद्यायुक्त कार्य है। इसे हम वेद, वैदिक साहित्य सहित ऋषि दयानन्द के द्वारा अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में प्रस्तुत विचारों व वैदिक सिद्धान्तों का अध्ययन कर जान सकते हैं व सभी अवैदिक कृत्यों को करना छोड़ सकते हैं। अविद्या दूर करने का यही उपाय है कि वेद व वैदिक साहित्य सहित सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ का अध्ययन किया जाये और प्रत्येक कार्य को सत्य व असत्य का विचार कर, उसकी परीक्षा कर, उसके तर्क एवं युक्तिसंगत होने के साथ वेद से पुष्ट होने पर ही स्वीकार किया जाये। ऐसा करने से हम अपने मनुष्य जीवन को सार्थक कर जीवन के लक्ष्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त हो सकते हैं। ऐसा न करने से हम अपने जीवन के लक्ष्य आत्मोन्नति व मोक्ष से दूर होते जाते हैं जिसे करना किसी भी मनुष्य के लिये उचित नहीं है। अतः मृतक श्राद्ध को करने से पूर्व इस विषय का विशद अध्ययन कर इसकी आवश्यकता, इससे सम्भावित लाभों की पूर्ति तथा मृतक पितरों की अवस्था एवं आवश्यकताओं पर वेद के परिप्रेक्ष्य तथा सामान्य ज्ञान के अनुसार भी विचार कर लेना चाहिये। ऐसा करने से हम सत्य निर्णय कर एक सत्य परम्परा का निर्वहन करने में समथ होंगे जिसका करना हमारे मनुष्य होने अर्थात् मननशील होने व सत्य का ग्रहण करने तथा असत्य का त्याग करने के नियम की दृष्टि से आवश्यक है।

सनातन वैदिक धर्म आत्मा के जन्म व मरण के सिद्धान्त अर्थात् पुनर्जन्म को स्वीकार करता है। जन्म के समय हमारे सभी संबंध बनते हैं तथा मृत्यु होने पर सभी सम्बन्ध समाप्त हो जाते हैं। मृत्यु होने पर न तो मृतक आत्मा को अपने पूर्व संबंधों व संबंधियों का ज्ञान रहता है और न ही जीवित परिजनों को आत्मा का पता होता है कि मृत्यु के बाद उसका कहां, किस योनि व अवस्था में जन्म हुआ है अथवा उसका मोक्ष हुआ या नहीं हुआ है। ऐसी अवस्था में अपने परिजनों की मृत्यु के बाद उनका वर्ष में एक बार आश्विन माह में मृतक श्राद्ध करना उचित नहीं है। जब हमारा दूसरों को कराया भोजन सम्मुख उपस्थित मनुष्य तक ही नहीं पहुंचता, तो मरे पीछे वह उन आत्माओं तक किसी रीति से पहुंच सकता है, ऐसा मानना कल्पना मात्र है। बिना वेद विधान व ऋषियों की सत्योक्त बातों के हमें किसी भी अन्धविश्वास व परम्परा को न तो मानना चाहिये न ही उसका समर्थन करना चाहिये। हमारी आर्यजाति का पतन इन व ऐसी काल्पनिक मान्यताओं व सिद्धान्तों का अनुसरण तथा सत्य वैदिक सिद्धान्तों को छोड़ देने के कारण से ही हुआ है। अतः सत्यासत्य का विचार कर सत्य सिद्ध कार्यों को ही करना मनुष्यों के लिए उचित व विपरीत का छोड़ना आवश्यक है।

हमारा सौभाग्य है कि आर्यजाति को पांच हजार वर्षों के बाद ऋषि दयानन्द नाम के एक सच्चे योगी व वेद ऋषि प्राप्त हुए थे। उन्होंने वेदों का उद्धार कर वेद के सत्य अर्थों का प्रचार किया था। उनकी सभी मान्तयायें वेद तथा तर्क व युक्ति पर आधारित हैं। उन्होंने ही हमें ईश्वर के सच्चे स्वरूप के दर्शन कराये और ईश्वर का ध्यान करने की विधि तथा वेद व ऋषियों की आज्ञाओं का पालन करते हुए प्रतिदिन पंचमहायज्ञों को करने की आज्ञा से परिचित कराया। हमारा सौभाग्य है कि हम आर्यों के पांच महाकर्तव्य रूप पंचमहायज्ञों को करते हैं जिसका परिणाम मनुष्य की शरीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति होती है और वृद्धावस्था में मृत्यु व शरीर परिवर्तन होने सहित जन्म व मरण से अवकाशरूप मोक्ष प्राप्ति के रूप में होती है। हमें न केवल स्वयं ही वेदों का पालन व आचरण करना है अपितु अपने परिवार व संबंधियों सहित सृष्टि के जन–जन में वेद प्रचार कर उनसे भी वेदाचरण करवाना है। ऐसा करने से ही हमारा जीवन सार्थक व सफल होगा। हमारी यह पृथिवी देवों की धरा व धाम में परिणत हो सकेगी। मृतक श्राद्ध व जड़ पूजा जैसे अवैदिक कृत्यों से मुक्ति मिलेगी और देश व समाज उन्नति को प्राप्त होंगे।

196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः09412985121

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल से 677वां वेबिनार सम्पन्न

141वाँ महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

महर्षि दयानन्द समग्र क्रांति के अग्रदूत थे –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

सोमवार 28 अक्टूबर 2024, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का 141 वाँ बलिदान दिवस ऑनलाइन आयोजित किया गया। यह करोना काल से 677 वाँ वेबिनार था। उल्लेखनीय है कि 30 अक्टूबर 1883 को अजमेर में स्वामी जी का बलिदान हुआ था। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द समग्र क्रांति के अग्रदूत थे। उनका प्रभाव समाज के हर क्षेत्र में दिखाई देता है। उन्होंने महिलाओं के उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दिया यज्ञ करने, वेद पढ़ने का अधिकार दिया। बाल विवाह का विरोध किया साथ ही विधवा हुआ का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि कोई कितना ही करे परंतु स्वदेशी राज्य सर्वोपरि है। स्वामी जी ने देश की आजादी के लिए आह्वान किया उनसे प्रेरणा लेकर अनेक नौजवान आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। स्वामी जी ने गुरूकुल शिक्षा प्रणाली का समर्थन किया। स्वामी जी ने पाखंड अंधविश्वास कुरीतियों पर सीधा प्रहार किया वह एक निर्भीक सन्यासी थे उन्होंने वैचारिक क्रांति का शंखनाद कर और लोगो की सोचने की दिशा ही बदल ड़ाली। आज स्वामी जी के आदर्शों पर चलने की आवश्यकता है। प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने कहा कि विश्व में लगभग 7000 आर्य समाज व 650 के लगभग डी ए वी विद्यालय, साथ ही 350 गुरुकुल स्वामी जी के संदेश का प्रसार प्रचार कर उनके स्मारक के रूप में कार्य कर रहे हैं। अनेक महिला आश्रम, अनाथालय उनकी कीर्ति कुछ बड़ा रहे हैं। सुधीर बंसल ने कहा कि स्वामी जी ने विष पीकर भी संसार को अमृत दिया। आर्य विदुषी उषा सूद, प्रवीना ठक्कर, जनक अरोड़ा, प्रो. करुणा चांदना,कौशल्या अरोड़ा, कुसुम भंडारी, रविन्द्र गुप्ता, दीप्ति सपरा, सुनीता अरोड़ा, रचना वर्मा, कृष्णा गांधी, संतोष धर आदि ने अपने विचार रखे और स्वामी जी की शिक्षाओं पर चलने का आह्वान किया।

विजय दशमी की सार्थकता विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

असुरों के संहार का पर्व है विजय दशमी –आचार्य विमलेश बंसल

सोमवार 14 अक्टूबर 2024, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में ''विजय दशमी की सार्थकता'' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल से 675 वाँ वेबिनार था। वैदिक विदुषी आचार्या विमलेश बंसल दर्शनाचार्य ने कहा कि विजया दशमी पर्व वीरों का अर्थात् क्षत्रियों का पर्व है।जिसे क्षत्रिय अपनी आन,बान और शान का प्रदर्शन कर राष्ट्र की संस्कृति,संतति और संपत्ति को सुरक्षित करने हेतु मनाते हैं। यह अन्याय पर न्याय का,असत्य पर सत्य का,अधर्म पर धर्म का, अज्ञान पर ज्ञान की विजय का पर्व है।यह दशमी तिथि में मनाया जाने के कारण विजय दशमी नाम से कहा जाता है।रावण, कुंभकर्ण,मेघनाद जैसे क्रूर असुरों का संहार कर राष्ट्र के सज्जन लोगों की विजय कराना ही विजयादशमी का एक मात्र उद्देश्य है।धार्मिक शक्ति भले ही निर्धन हो यदि संगठित और जागृत है तो भी उस धनवान, अधार्मिक,अन्यायी शक्ति संपन्न के ऊपर विजय प्राप्त कर सकती है।आज चारों तरफ अन्तः और बाह्य दोनों प्रकार के शत्रु असुर खुले आम घूमते नजर आ रहे हैं। आवश्यकता है आर्ष वैदिक शास्त्र और शस्त्र द्वारा हिंसक शक्तियों पर रोक लगे तथा सज्जन शक्तियों में वृद्धि हो। इस बात को जन–जन तक पहुंचाने का संदेश देना विजयादशमी का मुख्य लक्ष्य है। मुख्य अतिथि विमला आहूजा व अध्यक्ष कुसुम भंडारी ने भी अपने विचार रखे।परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया।प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका प्रवीना ठक्कर, रविन्द्र गुप्ता, सुधीर बंसल, जनक अरोड़ा, कौशल्या अरोड़ा, रजनी गर्ग, अनिता रेलन,ललिता धवन, गीता शर्मा आदि के भजन हुए।

आर्य समाज प्रशांत विहार का उत्सव सम्पन्न व माता सुमित्रा गुप्ता का अभिनन्दन

प्रथम चित्र में रविवार 27 अक्टूबर 2024, आर्य समाज प्रशांत विहार दिल्ली का वार्षिक उत्सव सोल्लास संपन्न हुआ। चित्र में वैदिक विद्वान आचार्य सोमदेव जी के साथ अनिल आर्य, प्रधान धर्मपाल परमार, मंत्री नरेंद्र कस्तूरिया, विनोद कालरा आदि। द्वितीय चित्र में आर्य नेत्री माता सुमित्रा गुप्ता आयु 97 वर्ष आर्य समाज नारायण विहार दिल्ली का अभिनंदन करते अनिल आर्य व माता संतोष वधवा। आप वेबिनार की श्रोता हैं।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 **मो.**: 9810580474
से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970